प्रेसनोट

पीएसआईटी कानपुर में पॉच दिवसीय फैकल्टी डेवलपमेन्ट प्रोग्राम का शुभांरभ,

.....

पीएसआईटी कालेज ऑफ इंजीनियरिंग के सिविल इंजीनियरिंग विभाग द्वारा आयोजित एवं **डा0 एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय, लखनऊ** द्वारा प्रायोजित **पॉच दिवसीय फैकल्टी डेवलवमेन्ट प्रोग्राम "..... ."** का वेबकॉन्फ्रसिंग के माध्यम से आयोजन किया।

मुख्य अतिथि डॉ0 बी0के0श्रीवास्तव, साईंटिस्ट एच एवं प्रोफेसर– आईआईटी मुंबई एवं विशिष्ट अतिथि डॉ0 राजेन्द्र सिंह, जलपुरूष, तरूण भारत संघ ने वेबकॉन्फ्रसिंग के माध्यम से इस प्रोग्राम के, पहले सत्र का शुभारंभ किया ।

सर्वप्रथम पीएसआईटी कालेज ऑफ इंजीनियरिंग निदेशक डॉ0 अजित कुमार शुक्ला ने सभी अतिथिओं का स्वागत किया एवं पॉच दिन तक चलने वाले इन प्रोग्राम की रूपरेखा के बारें में बताया। डॉ0 शुक्ला ने कहा कि हमें संस्थानों में पढ़ रहे इंजीनियरिंग छात्रों को प्रकृति के पोषण के बारे में ज्ञान एवं शिक्षा देनी चाहिये, जिससे नई नई तकनीकों से पानी की गुणवत्ता की बेहतर किया जा सकें।

मुख्य अतिथि डॉ0 बी0के0श्रीवास्तव, साईंटिस्ट एच एवं प्रोफेसर– आईआईटी मुंबई ने शुभांरभ कर कहा कि आज के समय में साफ पानी की गुणवत्ता एक महत्वपूर्ण पहलू है। हमें साफ पानी को उपलब्ध कराना एवं उसकी गुणवत्ता, दोनों का ध्यान रखना चाहिये। उन्होंनें कहा कि पानी के रखरखाव एवं उसके साफ करने की प्रक्रिया में काफी बदलाव आया है। आज के कुछ समय पूर्व साफ पानी की उपलब्धता आसानी से थी, पर आज बढती जनसंख्या एवं प्रदूषण के कारण गुणवत्ता परक पानी की कमी हो गई है।

उन्होनें कहा कि डीसेलिनियेसन के माध्यम से पानी को साफ करने की विधि का जिक्र करते हुए कहा कि इस तकनीक से विश्व भर में खारे पानी को साफ करके, विभिन्न प्रकार के उपयोगों में किया जा रहा है। इस समय ऐसी तकनीकों को इस्तेमाल करके पानी की गुणवत्ता का सही करके बल्कि उसे के अंदर रिचार्ज करके धरती के अंदर उपस्थित भूगर्भ का स्तर भी बढ़ा सकते है।

विशिष्ट अतिथि डॉ0 राजेन्द्र सिंह, जलपुरूष, तरूण भारत संघ ने कहा कि इस समय तकनीकी का इस्तेमाल जल की गुणवत्ता एवं उसकी उपलब्धता पर न होकर प्रकृति के संरक्षण में भी होना चाहिये। हमें अच्छे मानव के तरीके कार्य करना चाहिये जिससे हम अपने प्राकृतिक संसाधनों को वचा कर उसका संरक्षण कर सकेंगें।

आज विश्व में उपलब्ध तकनीकियों ने जल संसाधनों ाका सिर्फ दोहन ही किया है, जल का संरक्षण नही किया है। हमें प्रकृति के बदलाव को समझकर जल के प्राकृतिक संरक्षण पर ध्यान देना चाहिये।

कार्यक्रम समन्वयक एवं .....डॉ0 अनुराग तिवारी ने बताया कि इस प्रोग्राम में उत्तर प्रदेश के अलावा अन्य राज्यों से भी प्रतिभागी वेबकान्फ्रेन्सिग के माध्यम से जुडेगें। इस प्रोग्राम में विभिन्न संस्थानों के एक्सपर्ट भी अपने व्याख्यान देगें जिससे प्रतिभागियों को भविष्य में होने वाली समस्याओं एवं उनके समाधान करने में मदद मिलेगी। उन्होनें कहा कि इंजीनियरिंग एवं तकनीकी के माध्यम से प्राकृतिक संसाधनों के रिचार्ज पर कार्य करना चाहिये, पानी का संरक्षण प्रकृति के लिए अत्यन्त आवश्यक है, जिससे पानी की उपलब्धता एवं गुणवत्ता दोनों को बढ़ाया जा सकता है।

इस फैकल्टी डेवलपमेन्ट प्रोगाम में ऑनलाईन प्लेटफार्म से लगभग 150 प्रतिभागी एवं पीएसआईटी .... के अन्य प्रोफेसर आदि मौजूद रहे।